B.A. I
paper I

Harappan or Urban Culture

हड़प्पा नगर संस्कृति

हड़प्पा - संस्कृति एक विकसित, व्यवस्थित और सुनियोजित नगर की संस्कृति थी। हड़प्पा रावी नदी के तट पर और मोहनजोदड़ो सिन्धु नदी के तट पर इस संस्कृति के दो प्रमुख नगर थे। इसके अतिरिक्त लोहुमजोदड़ो, चान्हूदाड़ो, आमरी, कोटदीजी आदि छोटे-छोटे नगर थे। उत्खनन से ज्ञात होता है कि मोहनजोदड़ो हड़प्पा से काफी विशाल था। पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय की ओर से हुए उत्खनन के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि मोहनजोदड़ो नगर में प्रत्येक मील औसतन 40,000 जनसंख्या रही होगी। इससे मोहनजोदड़ो की विशालता का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से एक ही तरह की नगर-योजना का प्रमाण मिलता है। जॉन मार्शल का विश्वास है कि यहाँ की नगर-योजना संभव के किसी अभियंता निर्देशन के अन्तर्गत बनायी गयी होगी। दोनों नगरों के बीच 640 K.M. के अन्तराल होते हुए भी एक तरह की नगर योजना आश्चर्य ही नहीं बल्कि सभ्यता के इतिहास के लिए आश्चर्य का विषय हो जाता है। जान मार्शल ने उद्गार प्रकट करते हुए कहा है कि जब मेसोपोटामिया और मिस्र में शक्तिशाली राजवंश शासन करते थे और उनकी प्रजा गाँव में वास कर रही थी, उस समय ई० पू० तीसरी सहस्त्र शताब्दी में पंजाब और सिंध के नागरिक सुनिर्मित शहरों में वास कर रहे थे।

सिन्धु के नगर नदी के किनारे बसे होते थे। अतः जहाँ एक ओर जलापूर्ति, यातायात और प्राकृतिक सुरक्षा सहज सुलभ थी वहीं दूसरी ओर सिन्धु की वार्षिक बाढ़ का खतरा भी बना रहता था। अतः निवासी अपने नगरों को नदी की उपत्यका पर बनाने के साथ-साथ ऊँची-चौड़ी और मजबूत प्राचीरों से घेर कर रखते थे।

सिन्धु के नगरों के प्राचीर में चारों दिशा से एक-एक प्रवेश-द्वार हुआ करता था। इस प्रवेश में काठ के चौकठ और पल्ले लगे होने का प्रमाण मिलते हैं। अतः इन प्रवेश द्वारों पर नगर-प्रशासन की ओर से सुरक्षा-कर्मी भी होते थे। अतः यह प्रवेश द्वार ही नगर के अन्दर प्रवेश यातायात और वायु के गमनागमन का काम करता है।

प्रवेश द्वार से ही ही सिन्धु के नगर के प्रमुख मार्ग निकला करते थे। यह मार्ग सम्पूर्ण नगर

प्रवेश द्वार से ही सिन्धु के नगर के प्रमुख मार्ग निकलते थे। यह मार्ग सम्पूर्ण नगर को चार बड़े आयताकार खण्डों में विभाजित करता हुआ। नगर के बीच में विशाल गोलाकार चौराहा में परिणत हो जाता था।

प्रमुख मार्ग के दोनों किनारे नालियाँ बनी होती थी। नालियाँ पक्की ईंट और चूना तथा बालू के गारे से बनायी जाती थी। फलतः नालियाँ मजबूत और टिकाऊ होती थी। ये नालियाँ चौड़ी और गहरी होती थी और इनमें जगह-जगह पर गड्ढे बने होते थे। जल-निकास की ऐसी व्यवस्था प्राचीन विश्व की नदी-घाटी सभ्यता में अन्यत्र नहीं देखी जाती है। जी० जी० चाइल्ड के अनुसार — "हड़प्पा के नगरों में सुव्यवस्थित गली और सड़क के साथ-साथ जल निकास की उत्तम व्यवस्था इस बात का द्योतक है कि हड़प्पा के नगर-प्रशासन में आधुनिक तरह की नगरपालिका का अस्तित्व अवश्य रहा होगा।"

आवासीय भवन :→ सिन्धु के नगरों के आवासीय भवन भी पाँच प्रकार के मिले हैं इनमें बड़े, मझोले, छोटे, गुलामों के बैरक और गुलामों का मुहल्ला। हड़प्पा की अपेक्षा मोहनजोदड़ो में विशाल भवन मिले हैं। हड़प्पा के आवासीय मकान आवासों की सुविधाओं से परिपूर्ण हुआ करते थे। इस तरह वास्तुकला पूरे सिन्धु के नगरों में देखी जाती है। पर्सी ब्राउन के अनुसार → "सैंधव नगर के आवासीय भवन किसी ऊँची कला के द्योतक न होते हुए भी उनमें लगाए गये सामान को सजाने और संवारने की ऊँची तकनीक और भवनों की उपयोगिता आदि सचमुच आश्चर्यचकित कर देते हैं।"

बाजार → सिन्धु के नगरों के मध्य में चौराहे पर बाजार स्थित होता था। बाजार का निर्माण चौराहे के वृत्ताकार किनारों पर होता था। यह आवासीय भवन से भिन्न हुआ करता था। बाजारों की दुकानें आगे ईंट के स्तम्भ पर बनायी जाती थी। दुकानों का आकार-प्रकार भिन्न-भिन्न हुआ करता था।

सार्वजनिक भवन :→ हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से अनेक सार्वजनिक भवन के अवशेष मिले हैं। हड़प्पा के बनिस्पत मोहनजोदड़ो के सार्वजनिक भवन अधिक विशाल और संख्या में भी अधिक मिले हैं। सिन्धु के नगरों के सार्वजनिक भवन को सात भागों में बाँटा जा सकता है। स्नानागृह 2. पक्का स्नानागृह 3. सभा भवन 4. प्रशासनिक भवन 5. अन्नागार 6. होटल 7. मंदिर और

इस तरह सैन्धव सभ्यता एक विकसित व्यवस्थित, और सुनियोजित नगर की सभ्यता थी। हड़प्पा वासियों ने जिस नगर-कला को जन्म दिया था, वह ताम्र-पाषाण युग की सर्वोत्तम उपलब्धि थी।

Scanned with CamScanner

हड़प्पा-संस्कृति की सामाजिक-व्यवस्था → हड़प्पा-संस्कृतिकालीन सैन्धववासियों की सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान मूलतः पुरावशेषों के विश्लेषण पर आधारित है। मोहन जोदड़ो की मुद्राओं पर अंकित लेख पढ़े जाने पर कुछ विशेष बातें और भी प्रकाश में आ सकती हैं।

सैन्धव समाज मातृसत्तात्मक था। सैन्धव पुरावशेषों में नारी की नग्न और धुओं से ओत-प्रोत मृणमूर्ति की अधिकता। से इस तथ्य की पुष्टि होती है अतः समाजशास्त्रीय दृष्टि से गोत्र के आधार पर सैन्धव-समाज युग्म और एकल परिवार-व्यवस्था में विभाजित हो गया ~~[illegible]~~ होगा। व्यक्तिगत सम्पत्ति और पत्नी ही परिवार का आधार बनी होगी। फिर भी समाज में ~~[illegible]~~ नारियों की प्रधानता देखी जाती है। सैन्धव नारियां सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन में खुल कर भाग लेती थी।

सैन्धव समाज चार भागों में बंटा था। 1. पुरोहित 2. व्यापारी 3. शिल्पी 4. मजदूर और दास। वर्ग-भेद के अनुसार पुरोहित और व्यापारी उच्चवर्ग में, शिल्पी मध्यमवर्ग में, मजदूर और दास निम्नवर्ग में आते थे। पुरोहित और व्यापारी ही अधिक सुविधावर्ग के थे।

सैन्धववासी शाकाहारी और मांसाहारी दोनों हुआ करते थे। मांस में गाय, भैंस, बकरे, सुअर, भेड़ आदि का प्रयोग होता था। खाद्यान्नों में जौ, गेहूं और ज्वार का उपयोग होता था। फलों में खजूर, तरबूज, नींबू और दूध तथा मक्खन का प्रयोग करते थे। मसालों के प्रचुर उपयोग का प्रमाण मिला है।

उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों, मूर्तियों एवं बर्तन पर चित्रित नर-नारी के वेश-भूषा से ज्ञात होता है कि सैन्धव नर-नारियों के परिधानों में विशेष अन्तर नहीं था। वे लोग सूती एवं रेशमी वस्त्र का उपयोग होता था। कांसे की सुई का प्रमाण मिला है। पुरुष और नारी दोनों लम्बे केश रखते थे। कांसे का अस्तुरा और दर्पण मिले हैं लम्बे केश संवारने के लिए केश-विन्यास और केश-मुक्त (Hair pin) का उपयोग होता था। उनकी भौतिक और तकनीकी उपलब्धि और बौद्धिकता का ये परिचायक था।

संगीत और नृत्य सामूहिक मनोरंजन के साधन थे संगीत और नृत्य में पुरुषों की भागीदारी कहां तक थी, कहना कठिन है। बच्चे मृण खिलौने से खेला करते थे। धनी बच्चों के लिए धातु के खिलौने बनते थे। ऐसे खिलौने में पशु-पक्षी की मृणमूर्तियां, हड्डी और पत्थर की गोलियां तथा धातु की बैलगाड़ी प्रमुख हैं।

Scanned with CamScanner

इस तरह सैन्धव समाज में नदी घाटी सभ्यता के तमाम प्रमुख लक्षणों और पहलुओं का समावेश पाया जाता है।

आर्थिक अवस्था → सिन्धुवासियों के सुसम्पन्न भौतिक और नागरिक जीवन की आधारशिला वहाँ के समृद्ध आर्थिक जीवन का द्योतक कही जा सकती है। कृषि, पशुपालन, उद्योग, व्यापार आदि ही नदी घाटी की उपलब्धि मानी गए हैं। उत्खनन से प्रमाणित होता है कि सिन्धुवासी मानव जीवन के उन्नत उपादानों को प्राप्त करने के पीछे नहीं रहे। सिन्धु और आस-पास का मैदान नदियों और पहाड़ उनके समृद्ध भौतिक जीवन की गाड़ी को तेजी से खींचने में सहायक सिद्ध हुआ होगा। इसलिए सिन्ध के मैदान में समृद्ध बस्तियों और उनके बीच व्यापारिक और औद्योगिक नगरियों का विकास हुआ।

व्यापार → हड़प्पा संस्कृति के यौवनकाल में हस्त उद्योगों के विकास और हड़प्पा-संस्कृति के प्रसार ने व्यापार को जन्म दिया। फलतः हड़प्पा, मोहनजोदड़ो जैसे नगर-उद्योग और व्यापार के केन्द्र बने। इसके प्रसार ने कालिबंगा और लोथल जैसे औद्योगिक और सामुद्रिक व्यापारिक नगरों को जन्म दिया। इस तरह हड़प्पा-काल में धन-धान्य से पूर्ण और सैन्धव नगर व्यापारिक तौर पर विकसित थे। यही हस्त-उद्योग तथा व्यापारिक तौर पर विकसित थे। यही कारण था कि हड़प्पा में एक विस्तृत नगर योजना और उन्नत सामाजिक जीवन विकसित हुआ।

सैन्धव कला-कौशल → सिन्धु घाटी हड़प्पा-संस्कृति एक विकसित और सुव्यवस्थित नगर की संस्कृति थी। सिंधु घाटी की हड़प्पा संस्कृति की कला और हस्त कौशल को मुख्य रूप से सात खण्डों में बाँटा जा सकता है। ① मृणमूर्ति 2. पाषाणमूर्ति 3. धातुमूर्ति 4. मनके 5. मृदभांड कला 6. चित्रकला और मुहर। कला हड़प्पाकालीन संस्कृति के सिन्धु निवासियों की हड़प्पाकालीन संस्कृति के इस तरह सिन्धु निवासियों की हड़प्पाकालीन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अन्तर्गत कला और हस्तकौशल के विभिन्न पहलुओं का विकास हो चुका था।

धार्मिक जीवन → हड़प्पा-संस्कृति के सिन्धुवासियों ने धार्मिक विश्वास को भी जन्म दिया। किन्तु लिखित धार्मिक साहित्य, धार्मिक भवन आदि के अभाव में उनके धार्मिक विश्वास के पूरे स्वरूप का चित्र स्पष्ट नहीं हो पाता है। मुहरों पर अंकित चित्र और अन्य पुरावशेषों से ही अनुमान लगाया जाता है। धार्मिक विश्वास में जादू-टोना, जन्तर-मन्तर, जैसे अंधविश्वासों का भी प्रचलन देखा जाता है सिन्धु घाटी की हड़प्पा-संस्कृति धार्मिक जीवन सादा और भौतिक जीवन से

से संबंधित था। प्रकृति के उन्हीं आधारों को देवतुल्य माना जाता था। सैंधव धर्म का हिन्दू धर्म पर गहरा प्रभाव देखा जाता है। इसलिए सैंधव सभ्यता को सनातन संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है।

शासन-प्रबन्ध →

सार्वजनिक भवनों को देखते हुए यह अनुमान लगता है कि सभा-भवन सिन्धु समाज के प्रतिष्ठित और धनी-व्यक्तियों की विधायिनी संस्था के रूप में कार्य करता था। और इसी के द्वारा प्रशासनिक पदाधिकारियों का चयन होता था। सिन्धु के नागरिक प्रशासन की देख-रेख के लिए अलग-अलग अधिकारी होते थे। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा दो दूरस्थ थे- किन्तु दोनों की कोई केन्द्रीय समिति अवश्य होगी। नगरों की सफाई, सुरक्षा, व्यापार, नगर-निर्माण और मिस्त्रियों की देख-रेख की समितियों का अलग-अलग अस्तित्व रहा होगा। इस तरह सिन्धु की शासन-व्यवस्था किसी-न किसी तरह जनतांत्रिक रही होगी।

अतः उपर्युक्त विवरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि हड़प्पा की नगर-संस्कृति अवश्य ही विकसित सभ्यता थी।

//

Dr. Birendra Prasad Singh
Associate Professor
Deptt of AIBAS
Shershah Coll. Sasaram.

Scanned with CamScanner